

डॉ. राजीव ने हिंदी टाइपिंग के विकल्पों की दी जानकारी हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेन्द्रगढ़ में आयोजित हुई कार्यशाला

संवाद न्यूज एजेंसी

महेन्द्रगढ़। हिंदी हमारी राजभाषा है और इसके विकास के लिए बेहद आवश्यक है कि हम सभी इसके प्रचार-प्रसार के लिए मिलकर प्रयास करें। आज यदि हम चीन, जर्मनी, इजराइल जैसे विकसित देशों को देखे तो साफ हो जाता है कि इन देशों ने किस तरह से अपनी भाषा के सहारे विकास की बुलंदियों को हासिल किया है और अपनी एक अलग पहचान स्थापित की है।

ये बातें हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेन्द्रगढ़ के कुलपति प्रो.टंकेश्वर कुमार ने सोमवार को विश्वविद्यालय के राजभाषा अनुभाग, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से हिंदी टाइपिंग पर केंद्रित कार्यशाला में कहीं। उन्होंने कहा कि भारत के संदर्भ में भी इसी सोच के साथ आगे बढ़ना होगा और इसके लिए हिंदी भाषा के प्रति स्वीकार्यता का भाव बेहद जरूरी है। आज के समय में तकनीकी के सहारे यह चुनौती और भी सहज हो गई है और हम थोड़े से ही प्रयास से अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं। इस आयोजन में विशेषज्ञ वक्ता के रूप में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), खड़गपुर के वरिष्ठ हिंदी अधिकारी डॉ. राजीव रावत उपस्थित रहे। कार्यशाला की शुरुआत विश्वविद्यालय के कुलगीत के साथ हुई। इसके पश्चात आजादी का अमृत महोत्सव अभियान



हिंदी कार्यशाला को संबोधित करते वरिष्ठ हिंदी अधिकारी डॉ. राजीव रावत । संवाद

समिति की नोडल ऑफिसर व शिक्षी पीठ की अधिष्ठाता प्रो.सारिका शर्मा ने विषय परिचय प्रस्तुत किया और कार्यशाला की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.टंकेश्वर कुमार, विशेषज्ञ वक्ता डॉ. राजीव रावत का स्वागत किया। विश्वविद्यालय के कुलपति ने अपने संबोधन में इस तरह के आयोजनों को विद्यार्थियों, शोधार्थियों, शिक्षकों व शिक्षणेत्र कर्मचारियों के लिए बेहद उपयोगी बताया और कहा कि उन्हें विश्वास है कि इस तरह के आयोजनों से हिंदी के प्रयोग को बल मिलेगा। कुलपति ने अपने संबोधन में राजभाषा हिंदी के क्रियान्वयन और उसके व्यावहारिक उपयोग की दिशा में तकनीकी बदलावों को महत्त्वपूर्ण बताया और कहा कि हमें इन्हें अपनाकर आगे बढ़ना होगा।

कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ के रूप में

उपस्थित डॉ. राजीव रावत ने हिंदी का उपयोग करने का प्रयास करने के स्थान पर संकल्प के साथ हिंदी को अपनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि हिन्दी हमारी भाषा है और हमें चीन, जर्मनी, रूस जैसे देशों से भाषा प्रेम को सीखने की जरूरत है। उन्होंने अपने संबोधन में हिंदी की महत्ता के साथ - साथ उसके उपयोग और उसके लिए उपयोगी तकनीकी उपकरणों से प्रतिभागियों को अवगत कराया। अपने प्रशिक्षण के दौरान डॉ. राजीव रावत ने हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हिंदी टाइपिंग के विभिन्न विकल्पों की भी जानकारी दी। कार्यशाला में मंच का संचालन विश्वविद्यालय के हिंदी अधिकारी शैलेंद्र सिंह ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन विश्वविद्यालय के कुलानुशासक प्रो.प्रमोद कुमार ने प्रस्तुत किया।

Workshop on 'Hindi Typing'

Newspaper: [Dainik Jagran](#)

Date: 03-05-2022

हिंदी के विकास के लिए सामूहिक प्रयास अत्यंत आवश्यक : प्रो.टंकेश्वर कुमार

आइआइटी खड़गपुर के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डा. राजीव रहे उपस्थित

संवाद सहयोगी, महेंद्रगढ़: हिंदी हमारी राजभाषा है और इसके विकास के लिए बेहद आवश्यक है कि हम सभी इसके प्रचार-प्रसार के लिए मिलकर प्रयास करें। आज यदि हम चीन, जर्मनी, इजराइल जैसे विकसित देशों को देखें तो साफ हो जाता है कि इन देशों ने किस तरह से अपनी भाषा के सहारे विकास की बुलंदियों को हासिल किया है और अपनी एक अलग पहचान स्थापित की है। भारत के संदर्भ में भी इसी सोच के साथ आगे बढ़ना होगा और इसके लिए हिंदी भाषा के प्रति स्वीकार्यता का भाव बेहद जरूरी है। आज के समय में तकनीकी के सहारे यह चुनौती और भी सहज हो गई है और हम थोड़े से ही प्रयास से अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं।

यह विचार हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो.टंकेश्वर कुमार ने सोमवार को विश्वविद्यालय के राजभाषा अनुभाग, नगर राजभाषा



हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में उपस्थित विशेषज्ञ वक्ता को स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए कुलपति ● सौ. हकेंवि

कार्यान्वयन समिति (नराकस) व आजादी का अमृत महोत्सव अभियान समिति द्वारा हिन्दी टाइपिंग पर केंद्रित कार्यशाला को संबोधित करते हुए व्यक्त की। इस आयोजन में विशेषज्ञ वक्ता के रूप में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), खड़गपुर के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डा. राजीव रावत उपस्थित रहे। कार्यशाला की शुरुआत विश्वविद्यालय के कुलगीत के साथ हुई। इसके पश्चात आजादी का अमृत महोत्सव अभियान समिति

की नोडल आफिसर व शिक्षा पीठ की अधिष्ठाता प्रो.सारिका शर्मा ने विषय परिचय प्रस्तुत किया और कार्यशाला की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.टंकेश्वर कुमार व विशेषज्ञ वक्ता डॉ. राजीव रावत का स्वागत किया। विश्वविद्यालय के कुलपति ने कहा कि उन्हें विश्वास है कि इस तरह के आयोजनों से हिन्दी के प्रयोग को बल मिलेगा। कुलपति ने अपने संबोधन में राजभाषा हिन्दी के क्रियान्वयन और उसके व्यावहारिक

उपयोग की दिशा में तकनीकी बदलावों को महत्वपूर्ण बताया और कहा कि हमें इन्हें अपनाकर आगे बढ़ना होगा। कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित डा. राजीव रावत ने हिन्दी का उपयोग करने का प्रयास करने के स्थान पर संकल्प के साथ हिन्दी को अपनाने पर जोर दिया। डा. राजीव रावत ने हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी टाइपिंग के विभिन्न विकल्पों की भी जानकारी दी। कार्यशाला में मंच का संचालन विश्वविद्यालय के हिन्दी अधिकारी शैलेंद्र सिंह ने किया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन विश्वविद्यालय के कुलानुशासक प्रो.प्रमोद कुमार ने प्रस्तुत किया। ऑनलाइन व आफलाइन दोनों ही माध्यमों से आयोजित इस कार्यशाला में विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, शिक्षक, विद्यार्थी, शोधार्थी व शिक्षणोत्तर कर्मचारियों सहित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य भी उपस्थित रहे।

हिंदी के विकास के लिए सामूहिक प्रयास जरूरी



महेंद्रगढ़। हिंदी हमारी राजभाषा है और इसके विकास के लिए बेहद आवश्यक है कि हम सभी इसके प्रचार-प्रसार हेतु मिलकर प्रयास करें। ये विचार विवि के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आज यदि हम चीन, जर्मनी, इजराइल जैसे विकसित देशों को देखे तो साफ हो जाता है कि इन देशों ने किस तरह से अपनी भाषा के सहारे विकास की बुलंदियों को हासिल किया है और अपनी एक अलग पहचान स्थापित की है। भारत के संदर्भ में भी इसी सोच के साथ आगे बढ़ना होगा और इसके लिए हिंदी भाषा के प्रति स्वीकार्यता का भाव बेहद जरूरी है।

हिंदी के विकास के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक: प्रो. टंकेश्वर कुमार

■ ह.कें.वि. के हिन्दी टाइपिंग पर कार्यशाला का आयोजन

महेंद्रगढ़, 2 मई (परमजीव, मंडलन): हिन्दी हमारी राजभाषा है और इसके विकास के लिए बेहद आवश्यक है कि हम सभी इसके प्रचार-प्रसार हेतु मिलकर प्रयास करें। आज यदि हम चीन, जर्मनी, इत्यादि जैसे विकसित देशों को देखें तो साफ़ हो जाता है कि इन देशों ने किस तरह से अपनी भाषा के सहारे विन्यास की चुनौतियों को हलिया किया है और अपनी एक अलग पहचान स्थापित की है।

भारत के संदर्भ में भी इसी सोच के साथ आगे बढ़ना होगा और इसके लिए हिन्दी भाषा के प्रति स्वीकार्यता का भाव बेहद जरूरी है। आज के समय में तकनीकी के सहारे यह चुनौती और भी सहज हो गई है और हम थोड़े से ही प्रयास से अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं। उक्त विचार



ह.कें.वि. में आयोजित कार्यशाला में उपस्थित विशेषज्ञ वक्ता को स्मृति चिन्ता प्रदान करते हुए कुलपति।

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (ह.कें.वि.), महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने सोमवार को विश्वविद्यालय के राजभाषा अनुभाग, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नरामस) व आजादी का अमृत महोत्सव अभियान समिति द्वारा हिन्दी टाइपिंग पर केंद्रित कार्यशाला को संबोधित करते हुए व्यक्त की।

आयोजन में विशेषज्ञ वक्ता के रूप में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.आई.टी.), खडगपुर के विश्व हिन्दी अधिकारी डॉ. राजीव रावत उपस्थित रहे।

कार्यशाला की शुरुआत विश्वविद्यालय के कुलपति के साथ हुई। इसके पश्चात आजादी का अमृत महोत्सव अभियान समिति की चेयरमैन

ऑफिसर वरिष्ठार्पेंट की अध्यक्षता प्रो. यारिका शर्मा ने विषय परिचय प्रस्तुत किया और कार्यशाला की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार व विशेषज्ञ वक्ता डॉ. राजीव रावत का स्वागत किया। विश्वविद्यालय के कुलपति ने अपने संबोधन में इस तरह के आयोजनों को विद्यार्थियों,

शोधार्थियों, शिक्षकों व शिक्षणोत्तर कर्मीयों के लिए बेहद उपयोग्य बताया।

कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित डॉ. कबीर रावत ने हिन्दी का उपयोग करने का प्रयास करने के स्थान पर संकल्प के साथ हिन्दी को अपनाने पर जोर दिया। उन्होंने हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी टाइपिंग के विभिन्न विकल्पों की भी जानकारी दी।

कार्यशाला में संपन्न संघटन विश्वविद्यालय के हिन्दी अधिकारी रीतेश सिंह ने किया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन विश्वविद्यालय के कुलानुशासक प्रो. प्रमोद कुमार ने प्रस्तुत किया। अिनताइन व अभिलेखन दोनों ही माध्यमों से आवेक्षित इस कार्यशाला में विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, शिक्षक, शिक्षार्थी, शोधार्थी व शिक्षणोत्तर कर्मीयों सहित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य भी उपस्थित रहे।

हिन्दी के विकास के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक: प्रो.टंकेश्वर

महेंद्रगढ़, सरोज यादव (पंजाब केसरी): हिन्दी हमारी राजभाषा है और इसके विकास के लिए बेहद आवश्यक है कि हम सभी इसके प्रचार-प्रसार हेतु मिलकर प्रयास करें। आज यदि हम चीन, जर्मनी, इजराइल जैसे विकसित देशों को देखें तो साफ हो जाता है कि इन देशों ने किस तरह से अपनी भाषा के सहारे विकास की बुलंदियों को हासिल किया है और अपनी एक अलग पहचान स्थापित की है। भारत के संदर्भ में भी इसी सोच के साथ आगे बढ़ना होगा और इसके लिए हिन्दी भाषा के प्रति स्वीकार्यता का भाव बेहद जरूरी है। आज के समय में तकनीकी के सहारे यह चुनौती और भी सहज हो गई है और हम थोड़े से ही प्रयास से अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं। यह विचार हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो.टंकेश्वर कुमार ने सोमवार को विश्वविद्यालय के राजभाषा अनुभाग, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकस) व आजादी का अमृत महोत्सव अभियान



समिति द्वारा हिन्दी टाइपिंग पर केंद्रित कार्यशाला को संबोधित करते हुए व्यक्त की। इस आयोजन में विशेषज्ञ वक्ता के रूप में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), खडगपुर के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डॉ. राजीव रावत उपस्थित रहे। कार्यशाला की शुरुआत विश्वविद्यालय के कुलगीत के साथ हुई। इसके पश्चात आजादी का अमृत महोत्सव अभियान समिति की नोडल आफिसर व शिक्षी पीठ की अधिष्ठाता प्रो. सारिका शर्मा ने विषय परिचय प्रस्तुत किया और कार्यशाला की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.टंकेश्वर कुमार व

विशेषज्ञ वक्ता डॉ. राजीव रावत का स्वागत किया। विश्वविद्यालय के कुलपति ने अपने संबोधन में इस तरह के आयोजनों को विद्यार्थियों, शोधार्थियों, शिक्षकों व शिक्षणोत्तर कर्मचारियों के लिए बेहद उपयोगी बताया और कहा कि उन्हें विश्वास है कि इस तरह के आयोजनों से हिन्दी के प्रयोग को बल मिलेगा। कुलपति ने अपने संबोधन में राजभाषा हिन्दी के क्रियान्वयन और उसके व्यावहारिक उपयोग को दिशा में तकनीकी बदलावों को महत्वपूर्ण बताया और कहा कि हमें इन्हें अपनाकर आगे बढ़ना होगा।

हिन्दी के विकास के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक: प्रो.टंकेश्वर कुमार

आईआईटी खड़गपुर के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डॉ. राजीव रावत विशेषज्ञ के रूप में रहें उपस्थित

राष्ट्रीय खबर ब्यूरो

चंडीगढ़। हिन्दी हमारी राजभाषा है और इसके विकास के लिए बेहद आवश्यक है कि हम सभी इसके प्रचार-प्रसार हेतु मिलकर प्रयास करें। आज यदि हम यौन, जर्मनी, इंग्लैंडन जैसे विकसित देशों को देखें तो साफ ही जाता है कि इन देशों ने किस तरह से अपनी भाषा के सहारे विद्यार्थी को सुरक्षित को हासिल किया है और अपने एक अलग पहचान स्थापित की है। भारत के संदर्भ में भी इसके योग के साथ आगे बढ़ना होगा और इसके लिए हिन्दी भाषा के प्रति स्वीकार्यता का भाव बेहद जरूरी है। आज के समय में तकनीकी के सहारे यह चुनौती और भी सतत हो गई है और हम थोड़े से ही प्रयास में अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं। यह विचार हरिद्वार के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय (इकेवि), महोदय के कुलपति प्रो.टंकेश्वर कुमार ने सोमवार को विश्वविद्यालय के राजभाषा अनुभाग,



गणराजभाषा कार्यन्वयन समिति (पाठकस) व अकादेमी का अग्रत महोदय अधिवेशन समिति द्वारा हिन्दी टाइपिंग पर केंद्रित कार्यशाला को संबोधित करने हुए भावना की। इस अवसर पर विशेषज्ञ वक्ता के रूप में भारतीय औद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), खड़गपुर के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डॉ. राजीव रावत उपस्थित रहे। कार्यशाला की शुरुआत विश्वविद्यालय के कुलपति के साथ हुई। इसके परन्तुन अकादेमी का अग्रत महोदय अधिवेशन समिति की मोडल

अभिमान व शिक्षा पीठ की अग्रिमोडल प्रो.सरिता शर्मा ने विषय परिचय प्रस्तुत किया और कार्यशाला को अभ्यक्षक कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.टंकेश्वर कुमार व विशेषज्ञ वक्ता डॉ. राजीव रावत का स्वागत किया। विश्वविद्यालय के कुलपति ने अपने संबोधन में इस तरह के आयोजनों को विद्यार्थियों, शिक्षार्थियों, शिक्षकों व शिक्षणैता कर्मचारियों के लिए बेहद उपयोगी बनाना और कहा कि उन्हें विश्वास है कि इस तरह के आयोजनों से हिन्दी के

प्रयोग को बल मिलेगा। कुलपति ने अपने संबोधन में राजभाषा हिंदी के क्रियान्वयन और उसके व्यावहारिक उपयोग की दिशा में तकनीकी बदलावों को महत्वपूर्ण बताया और कहा कि हमें इनमें अग्रसर आगे बढ़ना होगा। कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित डॉ. राजीव रावत ने हिन्दी का उपयोग करने का प्रयास करने के स्थान पर संकल्प के साथ हिन्दी को अपनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि हिन्दी हमारी भाषा है और हमें यौन, जर्मनी,

हकेवि में हिन्दी टाइपिंग पर कार्यशाला का हुआ आरंभ

रुज जैसे देशों से भाषा प्रेम को देखने को मिलता है। उन्होंने अपने संबोधन में हिन्दी की महत्ता के साथ-साथ उसके उपयोग और उसके लिए उपयोगी तकनीकी उपकरणों से परिचितियों को अवगत कराया। अपने परिचय के दौरान डॉ. राजीव रावत ने हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी टाइपिंग के विभिन्न विकल्पों की भी जानकारी दी। कार्यशाला में संघ का संस्थान विश्वविद्यालय के हिन्दी अधिकारी श्री रीतेन्द्र सिंह ने किया जबकि धन्यवाद अग्रत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.टंकेश्वर कुमार ने प्रस्तुत किया। अग्रिमोडल व अग्रिमोडल दोनों ही माध्यामी से आयोजित इस कार्यशाला में विभिन्न विभागों के विचारधर्म, शिक्षक, विद्यार्थी, शोधार्थी व शिक्षणैता कर्मचारियों सहित नगर राजभाषा कार्यन्वयन समिति के सदस्य भी उपस्थित रहे।

कार्यशाला**हकेवि में हिन्दी टाइपिंग पर कार्यशाला का हुआ आयोजन****हिन्दी के विकास के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक : प्रो. टंकेश्वर**

आज समाज नेटवर्क

महेंद्रगढ़: हिन्दी हमारी राजभाषा है और इसके विकास के लिए बेहद आवश्यक है कि हम सभी इसके प्रचार-प्रसार हेतु मिलकर प्रयास करें। आज यदि हम चीन, जर्मनी, इजाइल जैसे विकसित देशों को देखें तो स्पष्ट हो जाता है कि इन देशों ने किस तरह से अपनी भाषा के सहारे विकास की चुनौतियों को हासिल किया है और अपने एक अलग पहचान स्थापित की है। भारत के संदर्भ में भी इसी सोच के साथ आगे बढ़ना होगा और इसके लिए हिन्दी भाषा के प्रति स्वीकार्यता का भाव बेहद जरूरी है।

आज के समय में तकनीकी के सहारे यह चुनौती और भी सहज हो गई है और हम सोचें, से भी प्रयास से



अपने स्वयं को प्राप्त कर सकते हैं। यह विचार इरिगाण्ड केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने सोमवार को विश्वविद्यालय के राजभाषा अनुभाग, नए राजभाषा कार्यालय समिति (नराकस) व आजादी का अमृत महोत्सव अभिषेक

समिति द्वारा हिन्दी टाइपिंग पर केंद्रित कार्यशाला को संबोधित करते हुए व्यक्त कीं। इस आयोजन में विशेषतः वक्ता के रूप में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), खड़गपुर के वरिष्ठ हिन्दी अभिज्ञानी डॉ. राजीव एनल उपस्थित रहे। कार्यशाला की सुरुआत विश्वविद्यालय के कुलपति



के खत हुए। इसके पश्चात आजादी का अमृत महोत्सव अभिषेक समिति की नोडल ऑफिसर व शिक्षा पीठ की अधिष्ठाता प्रो. शर्मिका शर्मा ने विषय परिचय प्रस्तुत किया और कार्यशाला को अभ्यक्षित कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार व विशेषतः वक्ता डॉ. राजीव एनल का

स्वागत किया। विश्वविद्यालय के कुलपति ने अपने संबोधन में इस तरह के आयोजनों को विद्यार्थियों, शोधार्थियों, शिक्षकों व शिक्षण कर्मचारियों के लिए बेहद उपयोगी बताया और कहा कि उन्हें विश्वास है कि इस तरह के आयोजनों से हिन्दी के प्रयोग को बल मिलेगा। कुलपति ने

अपने संबोधन में राजभाषा हिन्दी के किंवदन्धन और उसके व्यावहारिक उपयोग की दिशा में तकनीकी बदलावों को महत्वपूर्ण बताया और कहा कि हमें उन्हें अपनाकर आगे बढ़ना होगा। कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित डॉ. राजीव एनल ने हिन्दी का उपयोग करने का प्रयास करने के स्थान पर संकल्प के साथ हिन्दी को अपनाने पर जोर दिया।

उन्होंने कहा कि हिन्दी हमारी भाषा है और हमें चीन, जर्मनी, रूस जैसे देशों से भाषा प्रेम को सीखने की जरूरत है। उन्होंने अपने संबोधन में हिन्दी की महत्ता के साथ-साथ उसके उपयोग और उसके लिए उपलब्धी तकनीकी उपकरणों से प्रतिभागियों को अवगत कराया।